हंसता हुआ धर्म

वर्षा के दिन थे और गांव की नदी में बाढ़ आ गई थी। और लोग भागे हुए आए और मुल्ला नसरुद्दीन से कहा, यहां बैठे क्या कर रहे हो, तुम्हारी पत्नी नदीं में गिर गई! बाढ़ भयंकर है, किसी की हिम्मत हो भी नहीं रही। अब तो तुम्हारी ही अगर इच्छा हो तो कूदो और बचाओ।

मुल्ला एकदम भागा हुआ आया, कपड़े भी नहीं उतारे, एकदम नदीं में कूद पड़ा और लगा ऊपर की तरफ तैरने। भीड़ इकट्ठी हो गई थी, भीड़ ने चिल्लाया, नसरुद्दीन, यह तुम क्या कर रहे हो? तुम्हारी पत्नी को धार नीचे की तरफ बहा ले गई है।

नसरुद्दीन ने कहा कि चुप, मैं अपनी पत्नी को जानता हूं या तुम? दुनिया की कोई और स्त्री हो तो शायद धार उसको नीचे की तरफ ले जाए, मगर मेरी पत्नी सदा धार के विपरीत बहने वाली है। वह ऊपर की तरफ गई होगी। उसे मैं भलीभांति जानता हूं। उसके गणित को जानता हूं। तुम मुझे मत सिखाओ। मेरी पत्नी के संबंध में मुझे सब मालूम है। अगर मेरी पत्नी गिरी है तो ऊपर की तरफ बही होगी। उसकी खोपड़ी उलटी है।

मैंने सुना है, मुल्ला नसरुद्दीन अपने वकील के पास गया। अपने वकील को उसने अपना पूरा मामला समझाया और जैसा कि वकील कहता, जैसा कि कोई भी वकील कहता, कहना ही चहिए, नहीं तो वकील चले कैसे, जिए कैसे? वकील ने कहा : बिल्कुल मत घबड़ाओ। तुम्हारी जीत सुनिश्चित है। सब तर्क तुम्हारे पक्ष में हैं, सब कानून तुम्हारे पक्ष में हैं। विपरीत आदमी की हार में कोई शक ही नही, सौ प्रतिशत तुम जीतोगे।

मुल्ला उठ खड़ा हुआ। उसने कहा : नमस्कार, तो चलते हैं। उसने कहा : लेकिन जाते कहां हो? उसने कहा : यह तो मैने अपने विपरीत आदमी के तरफ से जो तर्क थे वे दिए थे। अगर हार मेरी निश्चित है तो नमस्कार, फिर काहे की फीस चुकानी और काहे की झंझट में पड़ना?

मुल्ला नसरुद्दीन के घर एक मेहमान आए। मुल्ला उन्हें भोजन कराने बैठा। मेहमान भोजन करने के करीब हैं, उठना-उठना चाहते हैं कि नसरुद्दीन ने अपनी पत्नी को आवाज दी, कहा : अरे भाई, डाक्टर साहब के लिए एक गरम-गरम पूड़ी और लाओ। मेहमान ने हाथ हिलाते हुए कहा कि नहीं-नहीं नसरुद्दीन, मैंने पहले ही चार ली हैं, अब बस करें। मुल्ला ने कहा : अरे भाई, गिन कौन रहा है, खा तो तुम सात चुके हो। एक और ले लो, एक में और क्या बिगड़ जाएगा?

मुल्ला नसरुद्दीन के घर में एक रात चोर घुसे। चोर बड़े सम्हल कर चल रहे थे, लेकिन मुल्ला एकदम से झपट कर अपने बिस्तर से उठा, लालटेन जला कर उनके पीछे हो लिया। चोर बहुत घबड़ाए। उसने मौका ही नहीं दिया भागने का। वह ठीक दरवाजे पर खड़ा हो गया लालटेन लेकर। चोरों ने कहा कि भई, तुम तो सो रहे थे, एकदम नींद से कैसे उछल पड़े?

मुल्ला ने कहा, घबड़ाओ मत, चिंता न लो। भागने की जल्दी न करो। अरे मैं तो सिर्फ तुम्हें सहायता देने के लिए लालटेन जला कर...अंधेरे में कैसे खोजोगे? तीस साल हो गए इस घर में मुझे खोजते हुए, एक कौड़ी नहीं मिली। और तुम अंधेरे में खोज रहे हो, मैंने दिन के उजाले में खोजा। इसलिए लालटेन जला कर तुम्हारे साथ आता हूं; अगर कुछ मिल गया, बांट लेंगे।

''क्या तुम्हारे पास कोई कारण है कि तुम्हें मोर्चे पर लड़ने के लिए नहीं भेजा जाए, मुल्ला?'

''हां। मेरी आंखें कमजोर हैं।'' मुल्ला ने कहा।

''क्या इसकी कोई रिर्पोट है तुम्हारे पास?''

''हां। यह है मेरी पत्नी का फोटो''।